

(iv) स्थिर वाताग्र → जब आमने सामने बहने वाली वायुधाराएँ एक दूसरे से प्रायः समानर-
बहती हैं तब उनके बीच का वाताग्र स्थिर
स्थिर में आ जाता है इसी दशा को स्थिर
वाताग्र कहते हैं

वाताग्र प्रदेश → भू-तल पर शीत व
शीतोष्ण कटिबंधों में निम्न
पुरुष वाताग्र प्रदेश विकसित होते हैं

(1) ध्रुवीय वाताग्र प्रदेश → (Polar frontal zone)

उत्तरी एवं दक्षिणी गोलार्ध के महान् आक्षांशों
(30°-40°) में मिलकर किरोबकूर शीतकाल में
ध्रुवीय एवं उपोष्ण वायुधाराओं का अभिसरण
आधिक प्रभावी व गतिशील बना रहता है
यह विकास दो प्रदेशों में होता है

(1) अन्य महासागरीय वाताग्र का विकास उत्तरी
अध-महासागर में होता है

(2) पुरान्त महासागरीय वाताग्र का विकास उत्तरी
एवं उत्तरी ध्रुवी पुरान्त में उत्तरी अमेरिका
के पश्चिमी तट तक से शीत प्रदेश
तक होता है

(3) आर्कटिक वाताग्र प्रदेश → इस वाताग्र
की उत्पत्ति
अपेक्षाकृत संकरे क्षेत्र में उत्तरी ध्रुव प्रदेशों
में होती है यहाँ पर आर्कटिक महाद्वी-
पीय एवं आर्कटिक महासागरीय गतिशील

के मिलने से योंडे समय के लिए सीमित
आर्कटिक तटीय क्षेत्रों के निकट ऐसा
वाताय विकसित होकर गतिशील रहता है।

3) **द्विमध्यसागरीय वाताय प्रदेश**

पछुआ वायु
शारी की पट्टी के शीतकाल में विषुवत
रेखा की ओर रिवर्स से द्विमध्य सागर
क्षेत्रों में विशेष वाताय प्रदेश का विकास
होता है। इसमें यूरोप व मध्य एशियाई
कठोर ठण्डी व शुष्क वायुशारी तथा द्विमध्य
सागरीय पट्टी की उत्तरी सीमा एवं कस्स
की खाड़ी के निकट की आर्द्र व उष्ण
वायु शारी आपस में प्रायः आमने सामने
मिलती हैं।

4) **लौथियन ग्रीन की चतुष्फलकीय
परिष्पना का आवाचनात्मक परीक्षण
कीषिए**

**लौथियन का चतुष्फलकीय
सिद्धान्त**

लौथियन ग्रीन ने सन् 1875 में महाद्वीप
और महासागरों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में
चतुष्फलक सिद्धान्त प्रस्तुत किया।
यह सिद्धान्त ज्यामिती के निम्न होतलों
पर आधारित है।

1) गोलाकार पिण्ड अपने धरातलीय क्षेत्र के
अनुपात में सर्वाधिक आयतन राखता है।